अंतरा-शब्दशक्ति

एहसास

(काव्य संग्रह)

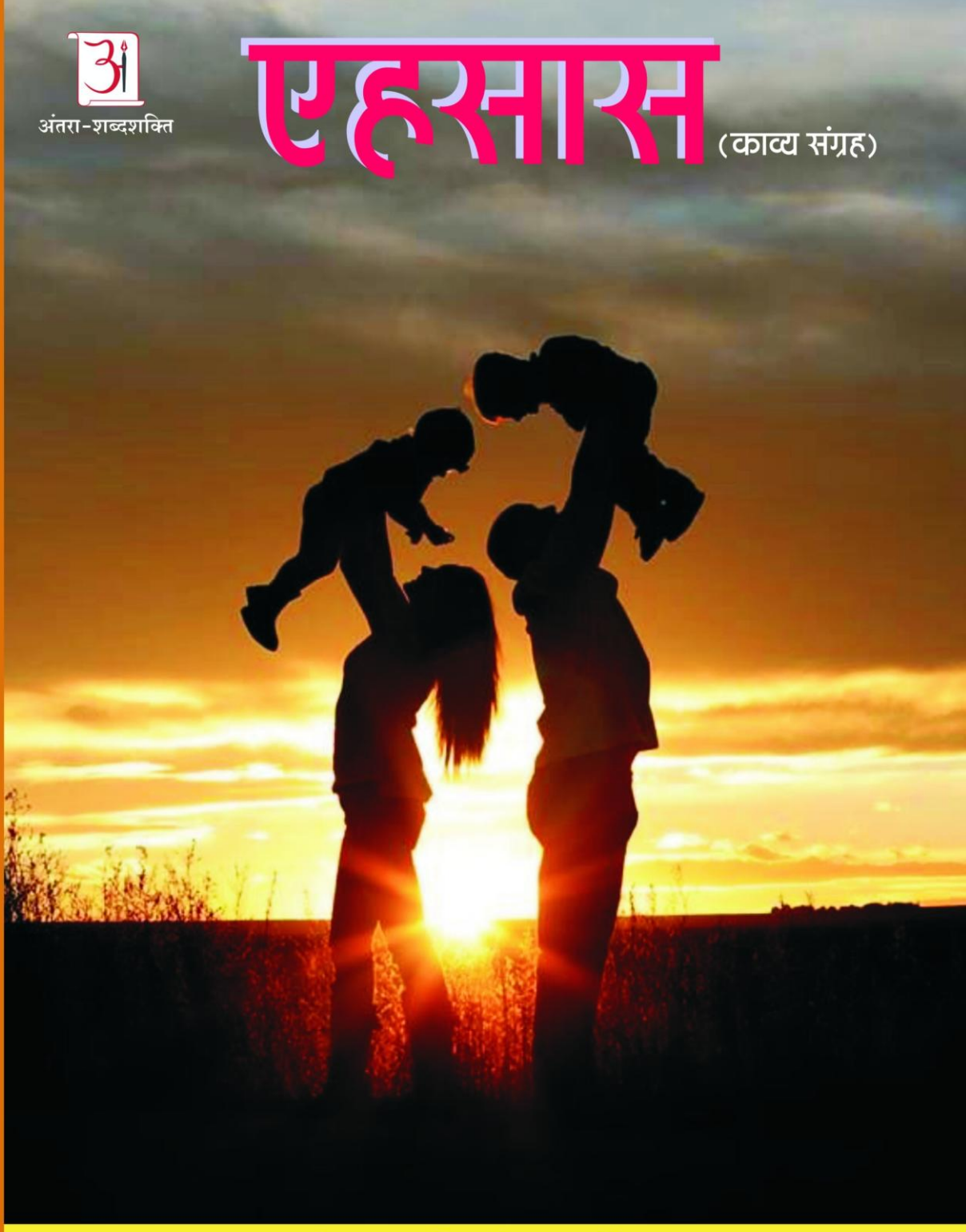

मीना विवेक जैन

एहसास

(काव्य सँग्रह)

मीना विवेक जैन

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-16-2

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © मीना विवेक जैन

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Ehsaas' by 'Meena Vivek Jain'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

भूमिका

यह मेरा ह्रदयासंकलन माँ शारदा की विशेष अनुकम्पा से वुमन आवाज मंच द्वारा मेरे मनके अहसासों का संग्रह का यह प्रथम संस्करण पठन हेतु आप सबके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

मैं अपने आपको सदैव धन्य पाती हूँ इस मंच से जुडकर ।राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी समृद्ध हो उसे समुचित सम्मान और प्रतिष्ठा मिले ऐसी मेरी सद्भावना है

किसी भी कार्य की सफलता के लिए संयुक्त प्रयासो का होना आवश्यक है और वुमन आवाज मंच ने लगभग 60 महिलाओं के साहित्य को एक साथ प्रकाशित करने का सराहनीय कार्य किया है और मुझे भी अपनी सोच , अपनी भावनाओं , अपने अहसासों को शब्दों में व्यक्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

अंत में धन्यवाद की कड़ी में मैं अपना हार्दिक धन्यवाद अपने परिजनों एवं उन सभी सहयोगियों को प्रेषित करती हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दिया है।और अपने मन के अहसासों को आपके समक्ष प्रस्तुत करती हूँ।

मीना विवेक जैन

अनुक्रमणिका

1. आज की नारी	5
2. धूप-छाँव	6
3. तकदीर	7
4. हमारा जीवन	8
5. सफर	9
6. पहचान	10
7. हकीकत	11
8. बेटियाँ	12
9. पिता	13
10.चंद लम्हे	14
11.भैया	15
12.शक	16

आज की नारी

अबला नही है आज की नारी
हर क्षेत्र में उसका मान है
जीत सफलता कदम चूमती
देश का ये स्वाभिमान है।
कठिन परिश्रम, दृढ निश्चय तप
साहस उसके मन में है
निर्भय होकर करे सामना
शक्ति उसके तन में है।
आकर्षक व्यक्त्वि है उसका
निर्मलता उसका गहना है
सुंदरता से भरी ये सरिता
लक्ष्य निरंतर ही बहना है।
नित-नित नये अजूबे जग में
नारी को निशदिन गढ़ना है
कंधे से कंधा जो मिलाकर
नारी को हर पल बढ़ना है।

धूप-छाँव

कभी धूप सा कभी छाँव सा
रंग बदलता ये जीवन
कभी बनाए कभी बिगाड़े
जाने कितने रंग दिखाये
कभी है शंका कभी भरोसा
संबंधो को समझ न पाये
कभी सुखो का कभी दुःखो का
जीवन भर है आमंत्रण
कभी धूप सा कभी छाँव सा
रंग बदलता ये जीवन
कभी अंधेरा कभी उजेला
जाने कौन सा खेल खिलाये
कभी है पूनम कभी अमावस
सच्चाई कुछ नजर न आये
कभी है नफरत कभी प्रेम सा
अनुभव करता मेरा मन
कभी छूप सा कभी छाँव सा
रंग बदलता ये जीवन।

तकदीर

टूटी हुई तकदीर का न रंज कीजिये
जीवन में हर एक पल का अब आनंद लीजिये
गर क्या हुआ जो एक भी
खुशी न मिल सकी
रिश्ता गमों से अपने आज
जोड़ लीजिए।
गुमराह न होना कभी
जीवन की राह में
बहना न तुम कभी किसी
गम के बहाव में।
गर क्या हुआ जो दोस्त ने
थामा न हाथ को
दुश्मन के सामने ये सिर
झुकने न दीजिए
टूटी हुई तकदीर का न रंज कीजिए।

हमारा जीवन

काश हमारा जीवन भी
कुछ ऐसा सुंदर होता
जो समाज के बीच में
एक फलदार वृक्ष सा होता।
होते जीवन में गुण ही गुण
और मन में मैल न होता
परोपकार में फलता रहता
लाभ समाज को होता।
जनकल्याण के फूल हृदय में
रंग-बिरंगे खिलते
थके हुए पथिकों को अपनी
शीतल छाया देते।
पर पतझड़ का ना होता मौसम
बस बसंत-बसंत ही होता
काश हमारा जीवन भी
कुछ ऐसा सुंदर होता।

सफर

बड़ा अनोखा है ये
जिंदगी का सफर
न है मंजिल का पता
न है रास्ते की खबर
कदम दर कदम बस
बढ़े जा रहे है
साथ छूटे कई
कई बने हम सफर
मिलना और बिछड़ना
किये जा रहे है
है सुखों से भरा था
कभी जो सफर
आज दुःख के काँटे
चुभे जा रहे है
बड़ा अनोखा है ये
जिंदगी का सफर
जिये जा रहे बस
जिये जा रहे है
--00--

पहचान

वह मेरा पहला दिन था
जब ससुराल में कदम उतारे थे
अनजाने से रिश्ते थे और
अनजाने सभी नजारे थे
अपनी कोई पहचान नही थी
बस नई-नवेली दुल्हन थी
किससे अपनी बात कहूँ बस
मन की ये ही उलझन थी
धीरे-धीरे समझ में आया
अब यही परिवार हमारा है
यही बिताना जीवन सारा
घर द्वार यही अब प्यारा है
पहचान हुई अब खुद की एक
गृहलक्ष्मी मैं कहलाती हूँ
सच्चे मन से करके सेवा
आशीष बड़ों का पाती हूँ
रखना है दोनो कुल की लाज
पहचान नही अब सोना है
परिवार की खुशियों की खातिर
जीवन ये मुझको जीना है।

हकीकत

ख्वाबों को हकीकत से
सजाना है मुझको
चाहतो को साज़िशों से
बचाना है मुझको
रिश्तों में भावों की
कोमलता हो ऐसी
जान भी माँगे तो
दे जाना है मुझको
प्रेम और अपनापन
कहते है किसको
सारी खुशियाँ लुटाकर
दिखाना है मुझको
लगे चाहे कितनी भी
चोटे हृदय में
दिल में ही जख्म
छिपाना है मुझको
बचे न भले कोई
निशानी मेरी पर
रिश्तों में प्रेम को
बचाना है मुझको
ये ख्वाब हकीकत
बनाना है मुझकों।

बेटियाँ

घर आँगन में चहकती महकती
बहुत प्यारी लगती हैं बेटियाँ
माँ की जान होती है बेटियाँ
देख दुनिया की तस्वीर
सहम सी जाती है माँ
थम सी जाती हैं साँसे
जब रोती है प्यारी बेटियाँ
पूरी कर दूँ हर खवाहिश उनकी
आँखो में यही सपना सँजोती है माँ
नींद ही नही आती है सोचकर
कि आखिर पराई होती है बेटियाँ
आखिर पराई होती हैं बेटियाँ

पिता

संघर्षमय जीवन फिर भी
चेहरे पर मुस्कान
बच्चों का साहस
बच्चों का सम्मान
परिवार की जिम्मेदारियाँ
जिंदगी बनाते आसान
सुख-दुःख में साथ हमेशा
दिखते नही परेशान
सारे सपने सच कर देते
बच्चों का वो है अभिमान
उनकी खुशियों की खातिर
वो अर्पित करते अपनी जान
ऐसे उन ''पिता'' के चरणो में
मेरा सादर-सादर प्रणाम
मेरा सादर-सादर प्रणाम

चंद लम्हे

चंद लम्हों का जीवन
मिला है तुझे
स्वास कब छूट जाये
ठिकाना नही
न मिलेगा जो धन तो
कोई गम नही
ये खजाना तेरे साथ
जाना नही
अपने कर्मो से जीवन का
श्रृंगार कर
तन जलेगा इसे अब
सजाना नही
कर ले चिंतन जो पल अब
मिला है तुझे
कल की चिंता में जीवन
जलाना नही
कर दया धर्म संयम से
जीवन वसर
व्यर्थ मानुष जनम को
गवाँना नही
चंद लम्हों का जीवन
मिला है तुझे
श्वांस कब छूट जाये
ठिकाना नही।

भैया

मेरे अंतर मन में ''भैया''
याद तुम्हारी हर-पल है
दूर बहुत हो मुझसे लेकिन
अहसास तुम्हारी पल-पल है
कितनी सारी बाते है जो
कहने को मन व्याकुल है
आँखे नम हो गई हैं मेरी
मिलने को मन आकुल है
पर संभव ये नही है मिलना
ये पीड़ा ही अब सहना है
यादे अपने मन में रखकर
जीवन पथ पर चलना है।

शक

"शक" की बात कभी न हो अब
मुझको बस विश्वास चाहिये
धन दौलत की चाह नही
न मोटर, बंगला, कार चाहिए
सदा रहे जीवन में मेरे
ऐसा मुझको प्यार चाहिए
"शक" की बात कभी न हो अब
मुझको बस विष्वास चाहिए
धोले मन के कालुष को जो
आँखों में ऐसा नीर चाहिये
मन के भावो को समझे जो
ऐसा मन का मीत चाहिए
"शक" की बात कभी न हो अब
मुझको बस विश्वास चाहिए
स्नेह-सहित हो जीवन अपना
ऐसी सच्ची सीख चाहिये
प्यार पराजित न हो अपना
प्यार की मुझको जीत चाहिए।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- मीना विवेक जैन
जन्मतिथि	- 01 जून 1984
स्थान	- शाहगढ़
शैक्षिक योग्यता	- बी.ए.
निवास स्थान	- श्रीमान विवेक जैन, जैन दूध डेयरी, वारासिवनी
विधा	- काव्य एवं संस्मरण
सम्मान	1. मैथिली शरण गुप्त स्मृति सम्मान 2. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2018, 3. भाषा सारथी सम्मान 4. कवि संगम द्वारा सम्मानित
प्रकाशन	स्पंदन (सांझा काव्य संग्रह), वुमन आवाज (सांझा काव्य संग्रह), सृजन समीक्षा, लोकजंग अखबार में रचनाएं प्रकाशित ।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-16-2

मूल्य- 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com